IAS BABA

इंटीग्रेटेड लर्निंग प्रोग्राम (ILP)-2023

Your Road to Mussoorie...

मुख्य परीक्षा SYNOPSIS (SAMPLE)

www.iasbaba.com ilp@iasbaba.com 91691 91888

1. **जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (United Nations Framework Convention on Climate Change-UNFCCC) के पार्टियों के सम्मेलन (Conference of the Parties-COP) के 26वें सत्र के प्रमुख परिणामों का वर्णन कीजिए। इस सम्मेलन में भारत ने क्या प्रतिबद्धताएं की हैं? (250 शब्द, 10 अंक) (UPSC CSE 2021)**

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए:

- परिचय - वह स्थान जहां यह आयोजित किया गया था और उसके महत्वपूर्ण परिणाम।
- COP26 के प्रमुख परिणाम
- COP26 की निराशा/चिंताएं (भले ही यह स्पष्ट रूप से न पूछा गया हो, कोई इसे संक्षेप में लिख सकता है)
- COP26 में भारत की प्रतिबद्धताएं
- निष्कर्ष (सम्मेलन का सारांश)

मुख्य शब्द (Key Words):

- पेरिस रूलबुक (Rulebook)
- मीथेन संकल्प
- रिवर्स फॉरेस्ट लॉस
- अनुकूलन वित्त
- पंचामृत संकल्प (शुद्ध शून्य) (Panchamrit Pledges (Net Zero))

परिचय

COP26 के दौरान, राष्ट्रों ने ग्लासगो जलवायु संधि को अपनाया, जिसका लक्ष्य 2020 के दशक को जलवायु कार्रवाई और समर्थन के एक दशक के रूप में बदलना है।

मुख्य भाग (Body)

COP26 के प्रमुख परिणाम (आपके सीखने के दृष्टिकोण के लिए कई अन्य बिंदु जोड़े गए हैं।)

- **1.5o लक्ष्य पर आम सहमति (Tacit consensus on 1.5o target):** वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों (पेरिस समझौता) से 2 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने का काल्पनिक लक्ष्य बना हुआ है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय विमर्श अब तापमान वृद्धि को सीमित करने के अधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्य अपनाने पर मजबूती से टिका हुआ है।
- **त्वरित कार्रवाई (Accelerating action):** वर्तमान जलवायु योजनाओं के साथ - राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान - महत्वाकांक्षा के अनुसार, ग्लासगो जलवायु संधि सभी देशों को 2025 के बजाय 2023 में मजबूत राष्ट्रीय कार्य योजना पेश करने का आह्वान करती है, जो कि इसकी मूल समयसीमा थी।
- **जीवाश्म ईंधन से दूर जाना:** पहली बार, राष्ट्रों को कोयले की शक्ति को कम करने और "अप्रभावी" जीवाश्म ईंधन सब्सिडी को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने का आह्वान किया गया था।
- **अनुकूलन के लिए समर्थन बढ़ाना:** ग्लासगो संधि में विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने और लचीलेपन के निर्माण में सहायता करने के लिए वित्त को दोगुना करने का आह्वान किया गया है। वर्तमान में अनुकूलन के लिए वित्त सभी जलवायु वित्त का लगभग ~ 25 प्रतिशत (ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए हरित प्रौद्योगिकियों की ओर 75 प्रतिशत के साथ) बनाया गया है।

- **पेरिस रूलबुक को पूरा करना:** राष्ट्रों ने पेरिस समझौते की नियम पुस्तिका को भी पूरा किया क्योंकि यह बाजार तंत्र और गैर-बाजार दृष्टिकोण तथा जलवायु कार्यों की पारदर्शी रिपोर्टिंग से संबंधित है।
- **वन (Forests):** 137 देशों ने 2030 तक वन हानि और भूमि क्षरण को रोकने और उलटने के लिए प्रतिबद्ध होकर एक ऐतिहासिक कदम आगे बढ़ाया। संकल्प को सार्वजनिक रूप से $12 बिलियन और निजी फंडिंग में $7.2 बिलियन का समर्थन प्राप्त है।
- **मीथेन संकल्प:** 15 प्रमुख उत्सर्जक सहित 103 देशों ने वैश्विक मीथेन संकल्प पर हस्ताक्षर किए, जिसका लक्ष्य 2020 के स्तर की तुलना में 2030 तक मीथेन उत्सर्जन को 30 प्रतिशत तक सीमित करना है। मीथेन मानव गतिविधियों से वर्तमान वार्मिंग के एक तिहाई के लिए जिम्मेदार है।
- **इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर पुश (Push) करना:** 30 से अधिक देशों, छह प्रमुख वाहन निर्माताओं और शहरों जैसे अन्य प्लेयरों ने सड़क परिवहन (इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए पुश) के डीकार्बोनाइजेशन को तेज करने के लिए अपना दृढ़ संकल्प निर्धारित किया, जो वर्तमान में वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 10 प्रतिशत है।
- **शुद्ध शून्य के लिए निजी वित्त:** निजी वित्तीय संस्थानों और केंद्रीय बैंकों ने वैश्विक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने की दिशा में खरबों डॉलर को फिर से संगठित करने के कदमों की घोषणा की। उनमें से नेट ज़ीरो के लिए ग्लासगो फाइनेंशियल एलायंस है, जिसमें 45 देशों में 450 से अधिक फर्मों को अपने सदस्य को मजबूत, विज्ञान-आधारित निकट-अवधि के लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता है।
- **विकासशील देशों के लिए नुकसान और क्षति का मुआवजा:** अब यह बहुपक्षीय चर्चा का हिस्सा है और अमेरिका ने सहमति व्यक्त की है कि कार्य समूहों में इसकी जांच की जानी चाहिए।
- पेरिस समझौते के अनुच्छेद 6 पर स्पष्टता- द्विपक्षीय कार्बन व्यापार कैसे आगे बढ़ सकता है और क्योटो प्रोटोकॉल के स्वच्छ विकास तंत्र की जगह एक केंद्रीकृत हब के निर्माण पर अधिक स्पष्टता है।
- **युवाओं का दबाव:** दुनिया भर में युवाओं द्वारा तत्काल कार्रवाई की अविश्वसनीय और भावुक सिफारिश की गई। यह सरकार और नेताओं पर भारी दबाव डाल रहा है और अगर कायम रहा तो यह अप्रतिरोध्य हो सकता है

COP26 के साथ निराशा/चिंताएं

- **अपर्याप्त अनुकूलन वित्त:** वर्तमान में अनुकूलन के लिए जलवायु वित्त केवल $15 बिलियन है, इसके दोहरीकरण का अर्थ $30 बिलियन होगा। यह पूरी तरह से अपर्याप्त है। यूएनईपी के अनुसार, विकासशील देशों के लिए अनुकूलन लागत वर्तमान में $ 70 बिलियन सालाना अनुमानित है जो 2030 तक सालाना अनुमानित $ 130-300 बिलियन हो जाएगी।
- **कोयले पर अपर्याप्त कार्रवाई (Insufficient action on coal):** कई देशों और गैर सरकारी संगठनों ने इस बात पर असंतोष व्यक्त किया कि कोयले पर भाषा काफी कमजोर हो गई थी (फेज-आउट से फेज-डाउन तक) और इसके परिणामस्वरूप, उतनी महत्वाकांक्षी नहीं थी जितनी इसे होना चाहिए।
- **पर्माफ्रोस्ट समस्या में मीथेन का बड़ा आपातकाल (Bigger methane emergency in Permafrost Problem):** मुख्य रूप से पशुधन द्वारा उत्पन्न मीथेन उत्सर्जन में कटौती निश्चित रूप से उपयोगी है, लेकिन एक बहुत बड़ी मीथेन आपात स्थिति है क्योंकि साइबेरिया, ग्रीनलैंड और आर्कटिक तटवर्ती क्षेत्रों में पृथ्वी के पर्माफ्रॉस्ट क्षेत्र पिघलना शुरू हो गए हैं, जिससे भारी मात्रा में कार्बन और मीथेन की मात्रा उत्सर्जन होगा।
- **भारत का नई पहलों में शामिल होने से इंकार करना:** भारत मीथेन प्लेज समूह का हिस्सा नहीं है। वन उत्पादों से संबंधित संभावित व्यापार उपायों पर एक खंड पर चिंताओं के कारण भारत भी वनों की कटाई से संबंधित समूह में शामिल नहीं हुआ है।
- **ठोस कार्रवाइयों का अभाव:** जलवायु परिवर्तन से निपटने के इरादे में अधिक महत्वाकांक्षी है लेकिन ठोस कार्रवाइयों के संदर्भ दिखाने के लिए बहुत कम है। इन्हें भविष्य के विचार-विमर्श के लिए टाल दिया गया है। अगले साल एक बैठक

में संवर्धित राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) की घोषणा होने की उम्मीद है। कोई अनुपालन प्रक्रिया नहीं है, लक्ष्य पर वितरण को प्रोत्साहित करने के लिए केवल "नाम और शर्म" है।

भारत ने अपने अंदर और बाहर के पर्यवेक्षकों को निम्नलिखित महत्वाकांक्षी और इस बिंदु पर बिना शर्त प्रतिज्ञाओं के साथ आश्चर्यचकित कर दिया है:

- गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता को वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट (गीगावाट) तक बढ़ाना।
- वर्ष 2030 तक अक्षय ऊर्जा (आरई) से 50 प्रतिशत ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करना।
- वर्ष 2030 तक कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में 1 अरब टन (बीटी) की कमी करना।
- अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45 प्रतिशत से कम कम करना।
- वर्ष 2070 तक शुद्ध शून्य कार्बन प्राप्त करना।

कई पर्यावरणविदों ने इन पांच प्रतिज्ञाओं ("पंचामृत") की सराहना की

- यह उम्मीद की जाती है कि यह भारत को डीकार्बोनाइजेशन की दिशा में एक मजबूत रास्ते पर ले जाएगा।
- हरित निवेश पर दांव लगाने वाली वाणिज्यिक संस्थाओं के लिए अच्छी तरह से भुगतान करने हेतु, घोषणाएं निश्चित रूप से आराम प्रदान करेंगी और सरकारी नीति उनके रिटर्न की रक्षा करेगी।

निष्कर्ष

यद्यपि सम्मेलन पेरिस समझौते से लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए आवश्यक कार्रवाई और प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में असंतोषजनक था, COP26 ने जलवायु कार्रवाई पर वैश्विक महत्वाकांक्षा को उठाया है।

अन्य संबंधित तथ्य/आंकड़े

- 1950 के दशक (6 बिलियन मीट्रिक टन) से CO2 उत्सर्जन अधिक तेजी से बढ़ना शुरू हुआ, और 2000 तक यह 25.23 बिलियन मीट्रिक टन तक पहुंच गया था।
- वर्ष 2000-2010 के बीच उत्सर्जन 32 प्रतिशत बढ़ कर 2020 में कुल 34.81 अरब मीट्रिक टन हो गया। उस वर्ष COVID-19 के प्रकोप के कारण उत्सर्जन में पाँच प्रतिशत की गिरावट आई।

जलवायु परिवर्तन और वन

- सभी वैश्विक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन का 11 प्रतिशत मानव के कारण होता है - जैसे वनों की कटाई के कारण, - ग्रह पर यात्रा करने से वाहनों से होने वाले उत्सर्जन।
- उष्णकटिबंधीय वन कार्बन के भंडारण में अविश्वसनीय रूप से प्रभावी हैं, जो सबसे खराब जलवायु परिवर्तन परिदृश्यों को रोकने के लिए आवश्यक शमन कार्रवाई का कम से कम एक तिहाई प्रदान करते हैं। फिर भी प्रकृति-आधारित समाधान सभी जलवायु वित्त पोषण का केवल 3% प्राप्त करते हैं।
- प्राकृतिक जलवायु समाधान जैसे कि खराब हुए जंगलों को बहाल करने से खर्च किए गए प्रति मिलियन डॉलर में 39 नौकरियां पैदा हो सकती हैं - यह तेल और गैस उद्योग की तुलना में छह गुना अधिक रोजगार सृजन दर है।

जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य:

- वर्ष 2030-2050 के बीच, जलवायु परिवर्तन के कारण कुपोषण, मलेरिया, डायरिया और गर्मी के तनाव से प्रति वर्ष 250,000 अतिरिक्त मौतें होने की संभावना है।
- स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष नुकसान की लागत (यानी, कृषि, पानी और स्वच्छता जैसे स्वास्थ्य-निर्धारण क्षेत्रों में लागत को छोड़कर), 2030 तक 2-4 बिलियन अमरीकी डालर / वर्ष के बीच होने का अनुमान है।

जलवायु परिवर्तन और ब्लू कार्बन

- विश्व के केवल 0.7% वन तटीय मैंग्रोव हैं, फिर भी वे उष्णकटिबंधीय वनों की तुलना में प्रति हेक्टेयर 10 गुना अधिक कार्बन भंडारित करते हैं।
- अगर हम इस दर से मैंग्रोव को खोना जारी रखते हैं (हर साल 800,000 हेक्टेयर नष्ट हो जाते हैं), तो वे अगली इसी सदी के भीतर गायब हो सकते हैं। यह नुकसान तटीय समुदायों के लिए चरम मौसम से एक महत्वपूर्ण बफर को हटा देता है और वातावरण में भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ता है।

जलवायु परिवर्तन और लागत

- पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण अक्सर मानव निर्मित हस्तक्षेपों की तुलना में अधिक लागत प्रभावी होता है। मालदीव में, प्राकृतिक प्रवाल भित्तियों को संरक्षित करना तटीय सुरक्षा के लिए समुद्र की दीवार बनाने की तुलना में चार गुना सस्ता है।
- **US$140 बिलियन प्रति वर्ष:** यह वह परिवर्तन है जो मानवता को गर्म हो रही दुनिया के अनुकूल बनाने के लिए आवश्यक है। यह बहुत कुछ लग सकता है, लेकिन यह वैश्विक जीडीपी के 0.2% से कम है। और लागत केवल उतनी ही बढ़ेगी जितनी हम महत्वाकांक्षी रूप से कार्य करने में लगेंगे।

2. SCO के उद्देश्यों और लक्षों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। भारत के लिए इसका क्या महत्व है? (250 शब्द, 10 अंक) (UPSC CSE 2021)

दृष्टिकोण:

उत्तर में निम्नलिखित भाग होने चाहिए

- परिचय - SCO क्या है
- SCO के मुख्य लक्ष्य
- SCO के उद्देश्य और महत्वपूर्ण विश्लेषण
- भारत के लिए महत्व
- भारत के लिए चुनौतियाँ
- निष्कर्ष

मुख्य शब्द:

- मध्य एशिया
- रूस-चीन अक्ष
- नाटो विरोधी
- चीन की वर्चस्ववादी महत्वाकांक्षाएं
- ऊर्जा सुरक्षा
- व्यापार और कनेक्टिविटी
- बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव

परिचय

- शंघाई सहयोग संगठन (Shanghai Cooperation Organisation-SCO) 2001 में शंघाई (चीन) में कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, चीन और रूस द्वारा स्थापित एक स्थायी अंतर-सरकारी अंतरराष्ट्रीय संगठन है। वर्ष 2017 में, भारत और पाकिस्तान इस संगठन के पूर्ण सदस्य बने।
- SCO में चार पर्यवेक्षक राज्य हैं-अफगानिस्तान, बेलारूस, ईरान और मंगोलिया।

- यह चार्टर एक संवैधानिक दस्तावेज है जो संगठन के लक्ष्यों व सिद्धांतों आदि के साथ इसकी संरचना तथा प्रमुख गतिविधियों को रेखांकित करता है।
- रूसी और चीनी SCO की आधिकारिक भाषाएँ हैं।

मुख्य भाग (Body)

SCO के मुख्य लक्ष्य इस प्रकार हैं:

- सदस्य देशों के बीच आपसी विश्वास और पड़ोसी संबंध को मजबूत करना;
- राजनीति, व्यापार, अर्थव्यवस्था, अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण, और अन्य क्षेत्रों में उनके प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देना;
- क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने तथा सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त प्रयास करना;
- एक लोकतांत्रिक, निष्पक्ष और तर्कसंगत नई अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था की स्थापना की ओर बढ़ना।

SCO की समालोचनात्मक जांच

- वर्ष 2005 में, अस्ताना घोषणा ने एससीओ देशों को "क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता को खतरा पैदा करने वाली स्थितियों के लिए संयुक्त एससीओ प्रतिक्रिया" पर काम करने का आह्वान किया, जो समूह की रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं को दर्शाता है।
- भौगोलिक महत्व के कारण एशिया में एससीओ की रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका है। चूंकि यह चीन द्वारा शुरू किया गया है, इसलिए संगठन इसे मध्य एशिया को नियंत्रित करने और क्षेत्र में अमेरिकी प्रभाव को सीमित करने में सक्षम बनाता है।
- यह भू-राजनीतिक मामलों में रूस-चीन की धुरी को मजबूत करने की ओर भी संकेत करता है क्योंकि यही दो शक्तियां हैं जो बड़े पैमाने पर संगठन की क्रियाओं को निर्धारित करती हैं।
- चीन की बीआरआई अवधारणा के पीछे एससीओ प्रमुख प्रेरक था और बीजिंग ने अब इस क्षेत्र में पहल के लिए अतिरिक्त अरबों का वचन दिया है। इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि चीन संसाधन संपन्न मध्य एशियाई क्षेत्र में अपनी आर्थिक और राजनयिक उपस्थिति बढ़ा रहा है।
- प्रारंभ में, एससीओ ने मध्य एशिया में आतंकवाद (क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी संरचना (आरएटीएस) के अपने स्थायी निकाय के माध्यम से), अलगाववाद और उग्रवाद पर अंकुश लगाने के लिए आपसी अंतर्क्षेत्रीय प्रयासों पर ध्यान केंद्रित किया। एससीओ ने अफगानिस्तान में स्थिरता वापस लाने में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- एससीओ चार्टर किसी भी द्विपक्षीय विवाद को उठाने की अनुमति नहीं देता है, लेकिन यह सामन्य जमीन खोजने और अंततः देशों के बीच बातचीत के लिए स्थितियां बनाने के लिए एक आरामदायक मंच प्रदान करता है। वर्ष 2020 में, एससीओ मेजबान, रूस, ने एलएसी पर गतिरोध पर चर्चा करने के लिए भारत और चीन के बीच बैठकों को प्रोत्साहित और सुविधाजनक बनाया।
- हालांकि, संगठन को लेकर भी चिंताएं हैं
    - चीन पर अपनी आधिपत्य की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए इस मंच का उपयोग करने का आरोप है।
    - भौगोलिक रूप से करीब होने के बावजूद, सदस्य के इतिहास, पृष्ठभूमि, भाषा, राष्ट्रीय हितों और सरकार के रूप, धन और संस्कृति में समृद्ध विविधता एससीओ के निर्णय लेने को चुनौतीपूर्ण बनाती है।
    - SCO अपने मुख्य लक्ष्यों में से एक को नई अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था स्थापित करने के रूप में वर्णित करता है, यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि इसमें पश्चिम विरोधी झुकाव है। पश्चिम SCO को उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के प्रतिकार के रूप में देखता है।

- मध्य एशियाई गणराज्य पहले तत्कालीन सोवियत संघ का हिस्सा थे और रूस इन देशों में प्राकृतिक प्रभावशाली प्रभावक के रूप में देखता है। SCO के माध्यम से इस क्षेत्र में चीनी उपस्थिति बढ़ने से चीन-रूस संबंधों में अड़चन आ सकती है जहां रूस एक कनिष्ठ भागीदार नहीं बनना चाहता है।
- अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार करने में चीन और रूस के ट्रैक रिकॉर्ड को देखते हुए सदस्य देशों (भारत को छोड़कर) के मानवाधिकारों के मुद्दों पर भी सवाल उठाए गए हैं।

भारत के लिए SCO का महत्व

- SCO को इस समय दुनिया का सबसे बड़ा क्षेत्रीय संगठन माना जाता है और इसमें चीन तथा रूस के बाद भारत तीसरा सबसे बड़ा देश है। इस संगठन में शामिल होने से भारत का अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व बढ़ा है।
- भारतीय हितों की जो चुनौतियाँ हैं, चाहे वे आतंकवाद से जुड़ी हों, ऊर्जा की आपूर्ति हो या प्रवासियों का मुद्दा...ये सभी मुद्दे भारत और SCO दोनों के लिए अहम हैं और ऐसे में भारत के इस संगठन से जुड़ने से दोनों को परस्पर लाभ होगा।
- SCO की सदस्यता मिलने के साथ ही अब भारत को एक बड़ा वैश्विक मंच मिल गया है। SCO यूरेशिया का एक ऐसा राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संगठन है जिसका केंद्र मध्य एशिया और इसका पड़ोस है। ऐसे में इस संगठन की सदस्यता भारत के लिए कई मौके उपलब्ध करवाने वाली साबित हो सकती है।
- चूँकि चीन SCO के माध्यम से क्षेत्र में अपने रणनीतिक हितों को पूरा करना चाहता है तो भारत भी इस स्थिति का लाभ उठाते हुए पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर लगाम लगाने के लिए चीन का सहयोग मांग सकता है, जैसा उसने हाल ही में अज़हर मसूद के मामले में किया और उसे अंतर्राष्ट्रीय आतंकी घोषित करवाया।
- मध्य एशिया के देश जो प्राकृतिक गैस-तेल भंडार के मामले में धनी हैं, उनके साथ संबंधों को विस्तार देने में SCO भारत के लिए एक अच्छा ज़रिया बन सकता सकता है। भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने और रूस व यूरोप तक व्यापार के ज़मीनी मार्ग खोलने के लिये इस मंच का इस्तेमाल करना चाहिये।
- भारत के लिये SCO की सदस्यता क्षेत्रीय एकीकरण, सीमाओं के पार संपर्क एवं स्थिरता को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान कर सकती है।
- SCO की क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना (RATS) के माध्यम से भारत गुप्त सूचनाएँ साझा करने, कानून प्रवर्तन और सर्वोत्तम प्रथाओं अथवा प्रौद्योगिकियों के विकास की दिशा में कार्य कर अपनी आतंकवाद विरोधी क्षमताओं में सुधार कर सकता है।
- SCO के माध्यम से भारत मादक पदार्थों की तस्करी तथा छोटे हथियारों के प्रसार पर भी रोक लगाने का प्रयास कर सकता है।
- आतंकवाद एवं कट्टरतावाद की सामान्य चुनौतियों को लेकर साझा प्रयास किये जा सकते हैं।
- लंबे समय से अटकी हुई तापी (तुर्कमेनिस्तान-अफ़ग़ानिस्तान-पाकिस्तान-भारत) पाइपलाइन जैसी परियोजनाओं पर काम शुरू करने में तथा IPI (ईरान-पाकिस्तान-भारत) पाइपलाइन को SCO के माध्यम से सहायता मिल सकती है।
- भारत तथा मध्य एशिया के बीच व्यापार में आने वाली प्रमुख बाधाओं को दूर करने के लिये SCO सहायता कर सकता है, क्योंकि यह मध्य एशिया के लिए एक वैकल्पिक मार्ग के रूप में कार्य करता है।
- SCO के माध्यम से सदस्य देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों का विस्तार करते हुए भारत को मध्य एशियाई देशों के साथ सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, बैंकिंग, वित्तीय तथा फार्मा उद्योगों हेतु एक विशाल बाज़ार मिल सकता है।
- सावधानी से इस मंच का इस्तेमाल करते हुए भारत अपने इस विस्तारित पड़ोस (मध्य एशिया) में सक्रिय भूमिका निभा सकता है तथा साथ ही यूरेशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करने का प्रयास भी कर सकता है।
- सबसे बड़ी बात यह कि SCO भारत को अपने पुराने तथा विश्वसनीय मित्र रूस के साथ अपने चीन और पाकिस्तान जैसे चिर प्रतिद्वंद्वियों के साथ जुड़ने के लिए एक साझा मंच प्रदान करता है।

निष्कर्ष

भारत को या तो पश्चिम के साथ अपनी बढ़ती साझेदारी को कम करना पड़ सकता है या एक नाजुक संतुलन अधिनियम में संलग्न होना पड़ सकता है - जैसा कि SCO ने पारंपरिक रूप से पश्चिमी विरोधी मुद्रा को अपनाया है।

अन्य संबंधित तथ्य /आंकड़े

- SCO में वैश्विक जनसंख्या का 40%, वैश्विक GDP का लगभग 20% तथा विश्व के कुल भू-भाग का 22% शामिल है।
- अपने भौगोलिक महत्त्व के चलते SCO एशियाई क्षेत्र में रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।
- अपनी इस विशेषता के कारण SCO मध्य एशिया को नियंत्रित करने तथा क्षेत्र में अमेरिकी प्रभाव को सीमित करने में सक्षम है।
- SCO को उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO) के समकक्ष के रूप में भी जाना जाता है।
- मध्य एशिया यूरेशिया के केंद्र में स्थित है और ऐतिहासिक रूप से, प्राचीन रेशम मार्ग का आधा हिस्सा है। यह क्षेत्र चीन, रूस, भारत, अमेरिका और यूरोप जैसे कई देशों के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विश्व द्वीप के भीतर भू-राजनीतिक परिवर्तनों के लिए एक धुरी के रूप में कार्य करता है। दरअसल, जैसा कि भूगोलवेत्ता हेलफोर्ड मैकिंडर ने देखा, "वह जो हृदयभूमि को नियंत्रित करता है वह दुनिया को नियंत्रित करता है"।
- रूस, चीन, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान (किर्गिज़ गणराज्य) और ताजिकिस्तान, जिन्हें शंघाई फाइव के नाम से जाना जाता है, 1996 में सोवियत काल के बाद क्षेत्रीय सुरक्षा, सीमा सैनिकों की कमी और आतंकवाद पर काम करने के लिए एक साथ आए थे। 1997 में, उन्होंने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसने SCO के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाले सीमा विवादों का समाधान किया।
- SCO विश्व की आबादी का लगभग 42 प्रतिशत और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 20 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है।
- मध्य एशिया में भंडार की कुल राशि विश्व के कुल यूरेनियम संसाधनों का लगभग 16.9 प्रतिशत है।
- वर्ष 2016 तक किर्गिस्तान (1.4 अरब अमेरिकी डॉलर) और ताजिकिस्तान (1.1 अरब अमेरिकी डॉलर) के विदेशी कर्ज का आधा हिस्सा चीन के एक्जिम बैंक से लिया गया था।
- मध्य एशिया ने देखा कि ग्रह पर मनुष्यों द्वारा की गई सबसे खराब पर्यावरणीय आपदाओं में से एक सिकुड़ता अरल सागर है, जो वास्तव में दो नदियों और उज्बेकिस्तान और कजाकिस्तान की सीमा से लगी एक झील थी।